❍ 18 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *आलस्य व अलबेलेपन की नींद का त्याग किया ?*

➢➢ *निश्चयबुधी विजयंती बनकर रहे ?*

➢➢ *प्रशनचित न बन प्रसन्नचित बनकर रहे ?*

➢➢ *ब्राह्मण परिवार से निभायी ?*

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ *जो भी परिस्थितियां आ रही हैं और आने वाली हैं, उसमें विदेही स्थिति का अभ्यास बहुत चाहिए इसलिए और सभी बातों को छोड़ यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा..... क्या होगा..., इस क्वेश्चन को छोड़ दो, अभी विदेही स्थिति का अभ्यास बढ़ाओ।* विदेही बच्चों को कोई भी परिस्थिति वा कोई भी हलचल प्रभाव नहीं डाल सकती।

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं होली हँस हूँ"*

〰✧ सभी अपने को सदा होली हंस अनुभव करते हो? *होली हंस का अर्थ है संकल्प, बोल और कर्म जो व्यर्थ होता है उसको समर्थ में बदलना। क्योंकि व्यर्थ जैसे पत्थर होता है, पत्थर की वैल्यु नहीं, रत्न की वैल्यु होती है। तो व्यर्थ को समाप्त करना अर्थात् होली हंस बनना।* तो व्यर्थ आता है? होली हंस फौरन परख लेता है कि ये काम की चीज नहीं है, ये काम की है। तो आप होली हंस हो ना। तो व्यर्थ समाप्त हुआ?

〰✧ *क्योंकि अभी नॉलेजफुल बने हो कि अगर अभी संकल्प, बोल या कर्म व्यर्थ गंवाते हैं तो सारे कल्प के लिये अपने जमा के खाते में कमी हो जाती है। जानते हो ना, नोलेजफुल हो? तो जानते हुए फिर व्यर्थ क्यों करते हो?* चाहते नहीं हैं लेकिन हो जाता है-ऐसे कहेंगे? जो समझते हैं अभी भी हो सकता है वो हाथ उठाओ। आप हो कौन? (राजयोगी) राजयोगी का अर्थ क्या है? राजा हो ना, तो मन को कन्ट्रोल नहीं कर सकते! किंग में तो रुलिंग पॉवर होती है ना! तो आप में रुलिंग पॉवर नहीं है? अमृतवेले और फिर सारे दिन में बीच-बीच में अपना आक्यूपेशन याद करो-मैं कौन हूँ?

〰✧ क्योंकि काम करते-करते यह स्मृति मर्ज हो जाती है कि मैं राजयोगी हूँ। इसलिये इमर्ज करो। ये नियम बनाओ। ऐसे नहीं समझो कि हम तो हैं ही राजयोगी। लेकिन राजयोगी की सीट पर सेट होकर रहो। नहीं तो चलते-चलते

कर्म में बिजी होने के कारण योग भूल जाता है, सिर्फ कर्म ही रह जाता है। लेकिन आप कर्मयोगी कम्बाइन्ड हो। *योगी सदा ही रुलिंग पॉवर, कन्ट्रोलिंग पॉवर में रहें। फिर राजयोगी डबल पॉवर वाले कभी भी व्यर्थ सोच नहीं सकते। तो अभी कभी नहीं कहना, सोचना भी नहीं कि राजयोगी वेस्ट कर सकते हैं। तो ये कौन-सा ग्रुप है? बेस्ट ग्रुप।* बापदादा को भी बेस्ट ग्रुप अति प्यारा है क्यों? 63 जन्म बहुत वेस्ट किया ना, अभी यह छोटा-सा जन्म बेस्ट ही बेस्ट।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

────────────────────────

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ सभी शान्ति की शक्ति के अनुभवी बन गये हो ना! शान्ति की शक्ति बहुत सहज स्व को भी परिवर्तन करती और दूसरों को भी परिवर्तन करती है। याद के बल से विश्व को परिवर्तन करते हो। याद क्या है? शान्ति की शक्ति है ना! *इससे व्यक्ति भी बदल जायेंगे तो प्रकृति भी बदल जायेगी।* इतनी शान्ति की शक्ति अपने में जमा की है?

〰✧ व्यक्तियों को तो बदलना है ही लेकिन साथ में *प्रकृति को भी बदलना है।* प्रकृति को सुख का कोर्स तो नहीं करायेंगे ना! व्यक्तियों को तो कोर्स करा देते हो लेकिन प्रकृति को कैसे बदलेंगे? वाणी से वा शान्ति की शक्ति से? योगबल से बदलेंगे ना तो योग में जब बैठते हो तो क्या अनुभव करते हो?

〰✧ शान्ति का संकल्प भी जब शान्त हो जाते हैं, *एक ही संकल्प - 'बाप और आप', इसी को ही योग कहते हैं।* अगर और भी संकल्प चलते रहेंगे तो उसकी योग नहीं कहेंगे, ज्ञान का मनन कहेंगे। तो *जब पॉवरफुल योग में बैठते हो तो संकल्प भी शान्त हो जाते हैं,* सिवाए एक बाप और आप। बाप के मिलन की अनुभूति के सिवाए और सब संकल्प समा जाते हैं - ऐसे अनुभव है ना?

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

────────────────────────

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

〰✧ आपकी ओरीजिनल स्टेज तो निराकारी है ना। निराकार आत्मा ने इस शरीर में प्रवेश किया है। शरीर ने आत्मा में प्रवेश नहीं किया, आत्मा ने शरीर में प्रवेश किया तो अनादि ओरीजिनल स्वरूप तो निराकारी है ना कि शरीरधारी है? शरीर का आधार लिया, लेकिन लिया किसने? *आप आत्मा ने, निराकार ने साकार शरीर का आधार लिया, तो ओरीजिनल क्या हुआ आत्मा या शरीर? आत्मा। यह पक्का है? तो ओरीजिनल स्थिति में स्थित होना सहज या आधार लेने वाली स्थिति में स्थित होना सहज?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- ब्राह्मणों की दो निशानियाँ-निश्चय और विजय"*

➳ _ ➳ मीठे बाबा की यादो में खोयी हुई मै आत्मा इस देह को छोड़ प्रकाश की काया में वतन की सैर को निकलती हूँ... मुझे देखते ही बाबा ख़ुशी से पुलकित हो उठे और बोले :- "मीठे बच्चे *निश्चय ही सच्चे प्रेम की आधारशिला है... और इसी में मंजिल का पता छुपा है.*. निश्चय और गहरा विश्वास ईश्वर पिता और बच्चों के बीच एक पुल की तरहा है... जिस पर चलकर सहज ही मंजिल बाँहों में दौड़ी आयेगी... मै आत्मा मीठे बाबा के प्यार में खोयी हुई सी, बाबा के इन कथनो पर सहर्ष स्वीकृति दे रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा मेरे प्रेम से भरे भावो पर मुस्कराये और बोले :-* "मेरे प्यारे से रूहानी गुल... जिन इंसानी रिश्तो को गहराई से बुनते आये... वहाँ भी तो निश्चय ही आधार रहा... ईश्वरीय राहो की भी वही बुनियाद है... *जितनी गहराई से, इस सच्चे प्रेम समन्दर में डूबोगे, उतने अथाह खजाने बाँहों में भर पाओगे.*..और देवताई मंजिल कदमो में स्वतः ही खिंची चली आएगी..."

➳ _ ➳ *प्यारे बाबा को अपने सर पर वरदानी हाथ फेरते... प्यार से समझाते सुनकर, मै आत्मा अपने भाग्य पर झूम उठी और बोली :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... आपके बिना जीवन कितना सूना और वीरान था... जीवन का न कोई लक्ष्य न ठिकाना था... आज आपने मुझे खुबसूरत देवताई लक्ष्य देकर क्या से क्या बना दिया है... *इतना प्यारा भाग्य मेरे हाथो में सजा दिया है.*.."

❉ *प्यारे बाबा मेरे दिल के अरमान सुनकर... मीठी नजरो से निहारने लगे और बोले :-* "सिकीलधे लाडले बच्चे... जनमो से सच्चे सुख और प्रेम के लिए तड़फते रहे हो... ईश्वरीय प्रेम को सदा तरसते रहे हो... *आज ईश्वर पिता बनकर सारे जज्बात, सतगुरु बनकर सारी मुरादे पूरी करने के लिए, दिल के द्वार पर खड़ा दस्तक दे रहा है.*.. तो निश्चय और गहरे विश्वास संग अपनी मंजिल की ओर बढ़ते जाओ..."

➳ _ ➳ *मीठे बाबा के वरदानी बोल और स्नेह दृष्टि में भीगती हुई मै आत्मा बाबा को कह रही :-* "सबसे प्यारे मेरे बाबा... *आप ईश्वर पिता यूँ मेरे दिल पर प्रेम की थाप दे.*.. और मै आत्मा न झूमूँ यह भला कैसे हो सकता है बाबा... आप ही तो सदा की मेरी पुकार रहे है... आपको पाने की चाहत में तो मै आत्मा कितना भटकी हूँ... अब जो मिले हो बाबा तो रोम रोम से कुर्बान हूँ..."

❉ *मीठे बाबा मेरी प्रेम भावनाओ में खो गये... और प्रेम की तरंगे जेसे पूरे वतन में तरंगित हो गई... और कहने लगे :-* "ईश्वरीय राहो पर सम्पूर्ण निश्चय के साथ, अपनी मंजिल को सहज ही पाने वाले बनकर, सदा की मुस्कराहट से सज जाओ... *देवताओ सी शानो शौकत और सुख, ईश्वरीय पुत्रो की बपौती है.*.. उसे तकदीर में भरकर, अनन्त खुशियो को चिर स्थायी बनाओ..."

➳ _ ➳ *अपने प्यारे बाबा का इस कदर प्यार पाकर... ऐसी मीठी रुहरिहानं करते हुए, मै आत्मा बोली :-* "मेरे सच्चे साथी बाबा मेने तो अपनी चाहतो में आपको ही बसाया था... बस आपको ही चाहा और दुआओ में सदा माँगा था... *कब सोचा था कि आपके पीछे स्वर्ग के मीठे सुख कतारो में खड़े, मेरा इंतजार कर रहे है.*.. ऐसा जादू भरा जीवन तो मेरी कल्पनाओ में भी न था... मीठे बाबा और मै आत्मा मुस्करायी और अपने स्थूल जगत मै लौट आई..."

_____

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- आलस्य व अल्बेलेपन की नींद का त्याग करना*"

➳ _ ➳ पूरे कल्प में केवल संगमयुग का ही समय मोस्ट वैल्युबुल समय है जब स्वयं भगवान आ कर सर्व खजानों से अपने हर ब्राह्मण बच्चे को सम्पन्न बना देते हैं। *कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हैं वो ब्राह्मण आत्मायें जो परमात्मा बाप द्वारा मिले इन अनमोल खजानों को अपने परमात्मा बाप की श्रीमत प्रमाण यूज़ करके इन्हें सफल करते हैं और कल्प - कल्प के लिए अपनी श्रेष्ठ प्रालब्ध बना लेते हैं*।

➳ _ ➳ मन ही मन स्वयं से बातें करती मैं परमात्मा बाप द्वारा मिले सर्व खजानों को स्मृति में ला कर स्वयं से प्रोमिस करती हूँ कि समय, संकल्प और श्वांसों का जो अनमोल खजाना भगवान ने मुझे गिफ्ट के रूप में दिया है उसे किसी भी प्रकार की गफलत में व्यर्थ नही गंवाना। *समय, संकल्प और श्वांसों के अनमोल खजाने को सफल करना ही सर्व खजानों की प्राप्ति का आधार है इसलिए अपना समय, संकल्प और श्वांस अपने प्यारे बाबा की याद और ईश्वरीय सेवा में सफल करते हुए अब मुझे सर्व खजानों को जमा करना है और उन्हें सर्व आत्माओं को बाँटना है*।

➳ _ ➳ स्वयं से यह दृढ़ प्रतिज्ञा कर, अपने प्यारे बाबा का दिल से शुक्रिया अदा करती हुई मैं जैसे ही उनकी याद में अपने मन बुद्धि को एकाग्र करती हूँ *बाबा सहज ही मुझे अपनी ओर खींच लेते हैं और मैं आत्मा सेकण्ड में आजाद पँछी की भांति देह रूपी पिंजरे का दरवाजा खोल उड़ जाती हूँ ऊपर खुले आसमान की ओर*। नीले गगन में विचरण करते, सूर्य, चांद, सितारों रूपी बत्तियों की रिमझिम को निहारते मैं इन्हें पार करके, चैतन्य सितारों की दुनिया

में प्रवेश करती हूँ। चमकते हुए चैतन्य सितारों की यह निराकारी दुनिया मेरे पिता परमात्मा का घर है।

➳ _ ➳ अपने बिल्कुल सामने मैं देख रही हूँ अनन्त प्रकाशमय ज्योतिपुंज के रूप में अपने शिव पिता परमात्मा को। *उनसे निकल रही शक्तियों और गुणों की अनन्त किरणे अब मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं और असीम आनन्द से मैं आत्मा भरपूर होती जा रही हूँ*। अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते हुए मैं आत्मा प्रेम के सागर अपने शिव पिता परमात्मा के प्यार में गहराई तक समाती जा रही हूँ। अपने निराकार शिव पिता परमात्मा की सर्वशक्तियों की छत्रछाया के नीचे बैठ मैं गहन सुख, शांति और आनन्द की अनुभूति कर रही हूँ। *सर्वशक्तियों की किरणों की शीतल फुहारें मन को असीम शीतलता प्रदान कर रही हैं*।

➳ _ ➳ सर्वशक्तियों से स्वयं को भरपूर कर, अब मैं परमधाम से नीचे आ जाती हूँ और अपनी लाइट की फ़रिशता ड्रेस को धारण कर सूक्ष्म लोक में प्रवेश करती हूँ। जहां बाहें पसारे बापदादा का लाइट माइट स्वरूप मुझे सहज ही अपनी ओर खींच रहा है। *बाबा की बाहों में अब मैं फ़रिशता समा रहा हूँ। अपनी बाहों में भर कर अपना असीम स्नेह मुझ पर लुटा कर अब बाबा मुझे शक्तिशाली दृष्टि दे रहे हैं और अपनी सर्वशक्तियों से मेरे अंदर एक नई स्फूर्ति, एक नई ऊर्जा का संचार करके गफलत से सदा मुक्त रहने का बल मुझमे भर रहें हैं*।

➳ _ ➳ बापदादा से लाइट माइट ले कर, अब मैं अपनी फरिश्ता ड्रेस को सूक्ष्म वतन में ही छोड़ कर, अपने निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप को धारण कर वापिस साकारी दुनिया मे लौट कर अपने साकारी तन में आ कर प्रवेश करती हूँ। *स्फूर्ति और एनर्जी से भरपूर मैं आत्मा अपने साकारी तन में अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर अब स्वयं को बहुत ही शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ*। बाबा की लाइट माइट ने मुझे डबल लाइट बना दिया है। हर प्रकार की गफलत से मुक्त स्वयं को सदा बलशाली अनुभव करते हुए अब मैं उमंग उत्साह से आगे बढ़ते, औरों को भी आगे बढ़ाने का तीव्र पुरुषार्थ कर रही हूँ।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं नेगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं स्व परिवर्तक सो विश्व परिवर्तक आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव ड्रामा के ज्ञान को स्मृति में रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा नथिंगन्यू की विधि से विजयी बन जाती हूँ ।*
✺ *मैं स्मृति स्वरूप आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ स्वभाव-संस्कारों को सेवा के समय देखो ही नहीं। देखते हैं ना-इसने यह किया, इसने यह कहा -तो सफलता दूर हो जाती है। देखो ही नहीं। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। हाँ जी और बहुत अच्छा, यह दो शब्द हर कार्य में यूज करो। स्वभाव वैरायटी हैं और रहने भी हैं। *स्वभाव को देखा तो सेवा खत्म। बाबा करा रहा है, बाबा को देखो, बाबा का काम है। इसकी ड्यूटी नहीं है, बाबा की है। तो बाप में तो स्वभाव नहीं है ना। तो स्वभाव देखने नहीं आयेगा।*

✺ *ड्रिल :- "दूसरों के स्वभाव-संस्कारों को सेवा के समय नहीं देखना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा आज अपने बाबा के सेंटर पर बाबा की मुरली हाथ में पकड़े... अपने सामने बैठी हुई कुछ आत्माओं को मुरली सुनाना प्रारंभ करती हूं... और उससे पहले मैं देखती हूं... की इन सामने बैठी आत्माओं में सभी आत्माओं के स्वभाव संस्कार बिल्कुल अलग है... और इन आत्माओं के सामने मैं अपने आप को मुरली सुनाने की स्टेज पर अनुभव नहीं कर पाती हूँ...* मैं देखती हूं कि कुछ आत्माएं ऐसी भी है... जो अपने पुराने स्वभाव संस्कारों के कारण हमेशा मुझे और अन्य आत्माओं को दुखी करने का प्रयास करती रहती हैं... और कुछ आत्माएं ऐसी हैं जो काफी समय से बाबा के बच्चे के रूप में पालना ले रही हैं और मुझ आत्मा को उन्होंने अपने ज्ञान से परिपूर्ण कर आज इस स्थिति पर विराजमान किया है...

➳ _ ➳ परंतु मेरी कुछ छोटी-छोटी गलतियों के कारण वह ज्ञानी आत्माएं मुझे क्रोध वश होकर मेरा कड़े शब्दों में अपमान कर देती है... जिस को मैं भुला नहीं पाती हूँ... और कुछ आत्माएं ऐसी भी थी जो हमेशा अपने आप को श्रीमत की लकीर के अंदर अनुभव करते हुए पुरुषार्थ कर रही थी... और इन सभी आत्माओं के स्वभाव संस्कार देखते-देखते मैं आत्मा बाबा की मुरली प्रारंभ नहीं कर पाती... तभी मेरा अंतर्मन मुझे श्रीमत का ज्ञान आभास कराता है... और मैं अपने आपको बाबा से जोड़ देती हूं... और महसूस करती हूं कि *मैं आत्मा इस देह में विराजमान हूँ और शिव बाबा मुझे निमित्त बना कर इन आत्माओं को

मुरली सुना रहे हैं...*

➳ _ ➳ और जैसे ही मैं अपने आप को निमित्त आत्मा अनुभव करती हूँ... तो मुझे आभास होता है कि *सामने बैठी हुई आत्माएं सिर्फ और सिर्फ मेरे बाबा के रूहानी बच्चे हैं... मुझे सभी आत्माएं अपने सामने फ़रिश्ते की भांति नजर आ रही है... और मुझे किसी भी आत्मा के स्वभाव संस्कार का बिल्कुल आभास नहीं होता है...* और मैं आत्मा अपनी इन कर्म इंद्रियों द्वारा सामने बैठी हुई आत्माओं को मुरली सुनाना प्रारम्भ कर देती हूं... मुरली सुनाते सुनाते मैं अपने आप में एक अद्भुत परिवर्तन महसूस करती हूं... मुझे अनुभव होता है कि मैं आत्मा अब बिल्कुल हल्की और फरिश्ते की भांति इस उड़ती कला स्वरूप बन गई हूं...

➳ _ ➳ और अब मैं आत्मा बिल्कुल रमणीकता से बाबा की मुरली सुना रही हूं... और जैसे ही कुछ देर बाद मुरली समाप्त होती है... तो हम सभी आत्माएं एक संकल्प में बाबा को याद करते हैं... और अपनी बेहद की सेवा में जुट जाते हैं... जैसे-जैसे सभी आत्माएं मेरे साथ सेवा करते हैं तो मैं अनुभव करती हूं... कि *ये बहुत अच्छी आत्माएं हैं... ये देवकुल की महान आत्माएं हैं... यह मेरी ईश्वरीय घराने की... मैं और ये सब आत्माएं सुखधाम में एक साथ मिलजुल कर रहेंगी...* तो अब वह सभी आत्माएं मुझे बस अपने समान बाबा के बच्चे ही नजर आते हैं... और उनके प्रति मेरा रूहानी स्नेह बढ़ता जाता है.. अब सेवा के समय मुझे हमेशा अब दूसरी आत्माएं निमित्त सेवाधारी अनुभव हो रही है... और अपने आप को भी मैं निमित भावना से सजाकर सेवा में अग्रणी होती जा रही हूं...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔